भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

उत्तर तालमेल कमेटी (NCC)

प्रेस रिलीज़

.....

तारीख़: 28 नवंबर, 2025.

अवसरवादी-विघटनवादी-संशोधनवादी तत्वों को निकाल बाहर किए बिना हमारी कम्युनिस्ट पार्टी को नहीं बचाया जा सकता !!

ग़द्दार अनंत और वेणुगोपाल/बलराज जैसों द्वारा दी जा रही अपीलों को ख़ारिज करें !!

अवसरवाद-विघटनवाद-संशोधनवाद का नाश हो !!

हमारी पार्टी की एकता कांग्रेस-नौवीं कांग्रेस द्वारा निर्धारित राजनीतिक लाइन पर अडिग रहो !!

साथियों,

सबसे पहले, हमारी पार्टी की जन मुक्ति छापामार सेना (पीएलजीए) द्वारा सामंतवाद, साम्राज्यवाद और दलाल नौकरशाह पूंजीवाद के ख़िलाफ़ लड़ते हुए जनता की सेवा में गौरवपूर्ण 25 बरस पूरे होने पर क्रांतिकारी बधाइयाँ देते हैं.

ब्राह्मणवादी हिंदुत्ववादी फासीवादी ताक़तों द्वारा किए जा रहे हमलों के बावजूद कुछ मीडियाकर्मी हमारी सर्वहारा वर्ग की पार्टी द्वारा जारी की जा रही प्रेस बयानों और रिपोर्टों को छापने का काम कर पा रहे हैं. यह बढ़ते जन प्रतिरोध और समाज का साम्यवाद की तरफ़ अटलता के साथ बढ़ते कदमों का ही एक प्रमाण है. आप सभी मीडियाकर्मियों को हम क्रांतिकारी अभिनंदन पेश करते हैं. हम सबसे प्रतिक्रियावादी शासक वर्ग के द्वारा किए जा रहे हमलों के ख़िलाफ़ बहादुरी से लड़ रहें हैं. इस लड़ाई में हमने कई बेहतरीन आत्मगत शक्तियों जैसे हमारी पार्टी के महासचिव कामरेड बसवाराज, कामरेड विवेक दा, कामरेड चलपति दा, कामरेड रेणुका दी, कामरेड राजू दा, कामरेड कोसा दा, कामरेड हिड़मा दा और कई अन्य साथियों को खोया है. यह मज़दूर वर्ग और उत्पीड़ित जनता ख़ासकर दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक, महिला, राष्ट्रीयताएँ व अन्य शोषित व उत्पीड़ित जनता के लिए एक बड़ा नुक़सान है. हम हमारे शहीद कामरेडों को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं.

इसके साथ ही इसी तरह के जोश और प्रतिबद्धता से हम ग़द्दार अवसरवादी-विघटनवादी-संशोधनवादी ताक़तों जैसे बलराज उर्फ़ बच्चा प्रसाद सिंह, सोनू उर्फ़ वेणुगोपाल, रूपेश उर्फ़ सतीश, डॉक्टर दर्शनपाल, अर्जुन प्रसाद सिंह, हरमन और इस सूची में जुड़ा नया नाम एमएमसी ज़ोन के पूर्व प्रवक्ता अनंत के ख़िलाफ़ घृणा व्यक्त करते हैं. अनंत जिसने हालिया प्रेस बयान में कहा है कि "हथियारबंद संघर्ष को छोड़ने की लाइन पार्टी बचाना है." हम यह साफ़ कर देना चाहते हैं कि यह पूरी तरह से विघटनवाद ही है. यहीं बातें रुस की सामाजिक जनवादी मज़दूर पार्टी के महान विघटनवादी ग़द्दार

लारेन की भी थी. इस संदर्भ में, कामरेड लेनिन ने कहा है कि पार्टी बचाने के नाम पर हथियारबंद संघर्ष छोड़ना पार्टी को विखंडित करने जैसा है. हमारी पोलित ब्यूरो ने अगस्त २०२४ में यह चिन्हित किया था कि आज पार्टी को बचाना ही हमारा केंद्रीय कर्तव्य है. पर सवाल यह है कि पार्टी को बचाने का मतलब क्या है?

पार्टी को बचाने का मतलब विघटकारियों से छुटकारा पाना है. विघटनकारी शासक वर्ग की ही नुमाइंदगी करते हैं इसीलिए इन्हें हमारी पार्टी में रहने का कोई अधिकार नहीं है. ये तत्व हमारी पार्टी के ग़ैरक़ानूनी अस्तित्व को सीपीएम की तर्ज़ पर एक खुली और क़ानूनी ढुलमुल ढाँचें में तब्दील करना चाहते हैं. हथियारबंद संघर्ष को छोड़ना, भूमिगत ज़िंदगी को छोड़ना और पार्टी के ग़ैर क़ानूनी अस्तित्व को छोड़ना कम्युनिस्ट पार्टी और क्रांति को तिलांजलि देना है. यह शोषण और उत्पीड़न विहीन समाज की जन-परिकल्पना को मिट्टी में मिलाना है. कामरेड लेनिन के नेतृत्व में रुस की सामाजिक जनवादी मज़दूर पार्टी (RSDLP) द्वारा साल 1908 में लिया गया एक फ़ैसला याद रखना ज़रूरी है. यह फ़ैसला कहता है कि "विघटनवाद पार्टी के अंदर कुछ बुद्धिजीवियों द्वारा मौजूदा अस्तित्त्वमान पार्टी संगठन को विखंडित (नष्ट करना, भंग करना, उसे ख़ात्मे की और धकेल देना) करने और उसे एक ढीले-ढाले संघ में तब्दील करने का एक प्रयास है जो हर हालत में क़ानूनी दायरे (खुले में क़ानून के अंतर्गत) में रहकर, यहाँ तक कि पार्टी का कार्यक्रम, कार्यनीति और परंपराओं (पुराने अनुभव) को खुले तौर पर त्यागकर काम करे." इसमें आगे कहा है कि "इन विघटनकारियों के प्रयासों के ख़िलाफ़ निर्मम वैचारिक और सांगठनिक संघर्ष चलाना बहुत ज़रूरी है." कामरेड लेनिन द्वारा दी गई इसी सीख के अनुसार उत्तरी तालमेल कमेटी ने आज के समय के विघटनवादियों के ख़िलाफ़ ज़ोरदार वैचारिक और सांगठनिक संघर्ष करने का फ़ैसला लिया है.

हम सभी मज़दूर और किसानों से यह अपील करते हैं कि ऐसे ग़द्दारों के ख़िलाफ़ निर्मम संघर्ष करें. हम बस्तर व एमएमसी ज़ोन के आदिवासी जनता से भी यह अपील करते हैं कि वे यह पक्का करें कि ऐसे ग़द्दार हथियार लेकर दुश्मन के खेमें में ना जा पाएँ. जनता को इन्हें सबक़ सिखाना चाहिए. हमें याद रखना चाहिए कि ये हमारे साथी नहीं बल्कि दुश्मन हैं. अस्थाई युद्ध विराम के नाम पर हथियारबद्ध संघर्ष छोड़ना ग़द्दार तरौचु, देयर्स और फावरे की तरह मज़दूर वर्ग के आंदोलन को छोड़कर भागने जैसा है. तरौचु, देयर्स और फावरे वे ग़द्दार हैं जिन्होंने 1871 में पेरिस कम्यून के साथ ग़द्दारी करके लाखों मज़दूरों को मरवाया था और अपना नाम इतिहास के कूड़ेदान में दर्ज करवाया था. साल 1977-1978 के आसपास भूतपूर्व पी॰डबल्यू॰ ने शांति वार्ता के लिए एकतरफ़ा युद्धविराम की नीति की समीक्षा कर कहा था कि एकतरफ़ा युद्ध विराम करने का फ़ैसला ठीक नहीं था. इसी तरह हाल ही में हमारी पार्टी की ईआरबी ने भी एकतरफ़ा युद्धविराम के ख़िलाफ़ पक्ष रखा था. हम सोचते हैं कि आज के विशेष समय में एकतरफ़ा युद्धविराम पार्टी को विघटित करने का एक अवसरवादी तरीक़ा ही है.

यहाँ हम देश और दुनिया की जनता के सामने विघटनकारियों की पार्टी विरोधी और जन विरोधी राजनीतिक लाइन का विश्लेषण भी पेश करना चाहते हैं क्योंकि यदि हम इनके राजनीतिक विचारों को क्रांतिकारी खेमें से साफ़ नहीं कर पाए तो हम पार्टी को नहीं बचा सकते. हम समझते हैं कि इन ग़द्दार विघटनकारियों की राजनीतिक लाइन का भंडाफोड़ करना बहुत ही ज़रूरी है.

आज के सारे विघटनकारी बलराज उर्फ़ बच्चा प्रसाद सिंह के ही अनुयायी हैं. इसीलिए यह जानना ज़रूरी है कि जन आंदोलनों में शामिल यह दुश्मन का प्रतिनिधि अपनी राजनीतिक लाइन के बारे में क्या कहता है. वह कहता है कि:

a) भारत में आज के समय का प्रधान अंतरविरोध साम्राज्यवाद है। इसीलिए बड़ा ज़मींदार वर्ग हमारे मुख्य दुश्मन नहीं रहा.

b) पार्टी के अन्दर दो सी सी होने चाहिए, एक शहरी काम के लिए होगी और दूसरा गांवों के काम के लिए। शहरी केंद्रीय कमेटी खुली और क़ानूनी होनी चाहिए.

c) पार्टी के सांगठनिक नियम शहरों के लिए अलग और गांवों के लिए अलग हों।

d) पार्टी के अंदर सैन्य लाइन ज्यादा हावी हो रही है और जन-आन्दोलन पर ध्यान नहीं दिया जा रहा।

e) पार्टी के अंदर जनवादी-केन्द्रीयता के नाम पर तानाशाही चल रही है, जहाँ बात करने का कोई स्पेस नहीं है।

f) महिला-पुरुष संबधों में मध्यम वर्ग से कम्युनिस्ट नैतिकता की बात करना फिजूल है, जैसे-शादी से पहले संबंध और अतिरिक्त विवाह संबंध।

g) चीन का रास्ता, हमारा रास्ता नहीं है। हमारा रास्ता भारतीय रास्ता है।

h) पंजाब-हरियाणा में पूंजीवाद आ गया है। इसीलिए हमें यहाँ भूमिगत पार्टी निर्माण और हथियारबद्ध संघर्ष का निर्माण नहीं करना चाहिए.

i) चुनाव में जाने का सवाल कार्यनीति का सवाल है, रणनीतिक महत्त्व का नहीं है। इसीलिए अपनी सुविधा के अनुसार चुनाव में हिस्सा लेना चाहिए.

j) बिहार-झारखंड और दंडकारण्य छापामार आधार क्षेत्रों में चल रहे हथियारबद्ध संघर्ष का प्रचार-प्रसार नहीं करना चाहिए.

आइए, अब वेणुगोपाल उर्फ़ सोनू और रूपेश गुट की विघटनकारी राजनीतिक लाइन पर नज़र डालें. वे कहते हैं कि:

1. देश की आर्थिक-राजनीतिक हालात बदल चुकी है.
2. भारत में चीनी या रुसी लाइन को लागू करना कठमुल्लावाद है.
3. हथियारबंद संघर्ष ही संघर्ष का एकमात्र तरीका अपनाने के कारण पार्टी वामपंथी भटकाव का शिकार हो गई है.
4. संसदीय भागीदारी क्रांतिकारी संघर्ष का हिस्सा होगी.

क्या ये सभी सवाल हमारी पार्टी में पहले से ही हल नहीं हो चुके हैं? क्या प्रचंड ने इन्हीं जैसे सवाल नहीं उठाए थे? पर हम इन सवालों को एक बार और देखेगें. हमारी पार्टी ने देश की आर्थिक और राजनीतिक हालातों में आए बदलावों के बारे में बरस 2021 में जारी दस्तावेज 'उत्पादन संबंधों में बदलाव-हमारा राजनीतिक कार्यक्रम' व्याख्या किया है. हमारी पार्टी ने न सिर्फ बदलावों का मूल्यांकन किया बल्कि हमारी पार्टी की 'रणनीति-कार्यनीति' में चिन्हित 5 क्षेत्रों की सूची में दो और नए क्षेत्र भी जोड़े हैं:- एक, जहाँ व्यापक पैमाने पर बागवानी हो रही है और दूसरा, जहाँ पार्टी नेतृत्व में भीषण वर्ग संघर्ष और वैश्वीकरण के कारण अर्ध-सामंतवाद तुलनात्मक रूप से कमजोर हुआ है. इस दस्तावेज के साथ ही, पार्टी ने नवजनवादी क्रांति के लिए संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए कई विशिष्ट कार्यनीति भी विकसित की है.

पर बहस अभी भी जारी है क्योंकि जब पार्टी के अंदर निम्न पूंजीवादी तत्वों की मौजूदगी होती है, जब सर्वहारा वर्ग निम्न पूंजीपति तत्वों से ज्यादा कुर्बानी की मांग करता है, तो वह सर्वहारा की क्रांतिकारी प्रतिबद्धता के कारण घबराहट महसूस करता है, फिर ऐसे समय में, निम्न पूंजीपति वर्गीय तत्व कुछ सिद्धांत निकालता है. ऐतिहासिक रूप से, महान संशोधनवादी

बर्नस्टीन जो कामरेड मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स के राजसत्ता को ख़त्म करने के क्रांतिकारी सिद्धांत में संशोधन करके उसे एक वर्गीय समझौतावादी सुधारवादी सिद्धांत में तब्दील करना चाहता था. सोनू नए रूप और रंग में बर्नस्टीन का ही प्रतिनिधित्व करता है.

कामरेड चारू मजुमदार और कामरेड कन्हाई चटर्जी के अमूल्य योगदान के कारण भारत का कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन आधुनिक संशोधनवाद के कीचड़ से बाहर निकल पाया जो भारतीय रास्ते के नाम पर शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और शांतिपूर्ण वर्ग संघर्ष की ख्रुश्चेव के संशोधनवादी विचारधारा को ही लेकर आगे बढ़ रहा था. कामरेड चारू मजुमदार और कामरेड कन्हाई चटर्जी ने स्थापित किया कि भारतीय जनता की मुक्ति के लिए कामरेड माओ द्वारा निर्धारित रास्ता ही होगा, चूँकि चीन जैसे भारत भी अर्धऔपनिवेशिक-अर्धसामंती ही है, भारतीय क्रांति का रास्ता चीनी रास्ता ही होगा, यह समझदारी एशिया, अफ्रीका और लातिन अमेरिका के औपनिवेशिक, अर्धऔपनिवेशिक-अर्धसामंती देशों में क्रांतियों के इतिहास और क्रांतिकारी जनयुद्ध में चीन के अनुभवों के बारे में ठोस मूल्यांकन के आधार पर बनाई गई. इन सब देशों में संघर्ष का मुख्य रूप हथियारबंद संघर्ष और संगठन का मुख्य रूप सेना ही होगी, पर जन संघर्ष और जनसंगठन के दुसरे तरीके भी जरुरी होंगें. इन सब तथ्यों के मद्देनजर हमारी पार्टी की रणनीति-कार्यनीति में जिक्र है कि "युद्ध के शुरू होने से पहले सारे संगठन और संघर्ष युद्ध की तैयारी में रहेंगें और युद्ध छिड़ जाने के बाद प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से युद्ध की सेवा में होंगें." रास्ते का सवाल केवल तब हो सकता है जब कोई देश कुछ व अन्य रूपों में सर्वहारा की तानाशाही स्थापित करने का अनुभव हासिल करे. इसके आधार पर समान्यीकरण बन सकता है और एक आम नियम बन जाता है जिसे समान परिस्थितियों में हरेक जगह लागू किया जा सकता है. इसीलिए 'भारतीय रास्ते' की बातें करना बकवास है. यह क्रांतिपूर्व अर्धऔपनिवेशिक अर्धसामंती चीन में लोगों द्वारा दी गई महान कुर्बानियों द्वारा स्थापित रास्ते को छोड़ने की एक दलील है. यह एक साम्राज्यवादी आकाओं की प्रशंसा गान में हथियारों को छोड़ देने की ही दलील है. यह दक्षिणपंथी अवसरवाद के अलावा और कुछ नहीं है. पार्टी के अंदर अवसरवादी और विघटनवादी हमेशा सही सर्वहारा लाइन को मिटटी में मिला देने के लिए एक तरीके के रूप में वामपंथी भटकाव के खिलाफ संघर्ष करने के नारे का इस्तेमाल करते हैं. यह याद रखना जरुरी है कि हमारी अगस्त २०२४ में पोलित ब्यूरो द्वारा पार्टी के अंदर कुछ क्षेत्रों में दक्षिणपंथी भटकाव को चिन्हित किया था.

इस दस्तावेज में कहीं भी वामपंथी भटकाव का जिक्र नहीं किया गया है. यदि 2019 में पार्टी द्वारा सुदृढ़ीकरण के आह्वान से लेकर अब तक के कालखंड को देखा जाए, जब पार्टी भीषण संकट का सामना कर रही है; हम पार्टी के रूप में भूमिगत पार्टी निर्माण नहीं करने और पार्टी को खुले और कानूनी कामकाज तक सीमित करने जैसे दक्षिणपंथी रुझानों के खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं. इस व्यवहार को तोड़ने के मकशद से पार्टी ने सुदृढ़ीकरण अभियान लिया और शहीद कामरेड महासचिव ने उत्तर भारत के कामरेडों के नाम एक चिट्ठी लिखी. यह नहीं है कि पार्टी ने खुले कानूनी जनांदोलन नहीं बनाए. हमने सैन्य कैम्पों के खिलाफ बड़े-बड़े जनांदोलनों का निर्माण किया है. दंडकारण्य में सिलगर आंदोलन और बेच्चाघाट आंदोलन इसके कुछ उदाहरण हैं. इसी प्रकार, हमारी पार्टी ने देश के उत्तर भारत में भी तीन खेती कानूनों और CAA के खिलाफ खुले कानूनी संघर्षों का नेतृत्व किया.

ये सारे विघटनकारी जो बात उठा रहे हैं, उसमें कोई भौतिक सच्चाई नहीं है. इन्होंने वामपंथी भटकाव की एक भी घटना को पेश नहीं किया है. ये सभी पार्टी को दंतविहीन (बिना दांतों की) बनाना चाहते हैं. इसीलिए हम आप सभी पार्टी कार्यकर्ताओं और क्रांतिकारी जनता से अपील करते हैं कि:

१. इन विघटकारी तत्वों की जनता विरोधी शासक वर्गीय राजनीतिक लाइन के ख़िलाफ़ संघर्ष करते हुए भंडाफोड़ करें.

२. जन मुक्ति छापामर सेना के गौरवशाली पच्चीसवीं वर्षगाँठ पूरे क्रांतिकारी उत्साह के साथ मनाओ.

३. कामरेड देव जी, कामरेड किशन दा, कामरेड शीला दी, कामरेड प्रमोद मिश्रा, कामरेड किशोर दा, कामरेड दीपक राव और अन्य सभी राजनीतिक बंदियों ख़ासकर माओवादी क्रांतिकारी राजनीतिक बंदियों की रिहाई के लिए संघर्ष करें.

जारीकर्ता:
उत्तर तालमेल कमेटी (NCC)
भाकपा (माओवादी)